International Journal of Humanities and Social Science Research
ISSN: 2455-2070; Impact Factor: RJIF 5.22
Received: 04-11-2019; Accepted: 05-12-2019
www.socialsciencejournal.in
Volume 6; Issue 1; Janaury 2020; Page No. 16-19

महाभारत से सम्बन्धित प्रमुख घटना एवं तथ्य

श्रीमती प्रतिभा तिवारी
भगत सिंह नगर (बघवा) कबरई, महोबा, उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश
भारतीय धर्म संस्कृति एवं दर्शन का पूर्ण चित्र उपस्थित करने वाला एक मात्र ग्रन्थ महाभारत ही है महाभारत 18 पर्वो में निबद्ध है तथा इसकी प्रगति के तीन चरण है जिसका निबन्धन क्रमशः जय भारत और महाभारत के रूप में विभिन्न उद्देश्य की पूर्ति के लिये किया गया है महाभारत का मूलरूप जयनाम से प्राप्त होता है इसकी रचना महार्षि वेदव्यास ने की थी इस 8800 श्लोक थे।
जयो नामेतिहासोऽयं श्रोतत्यों विजिगीषुणा। (महा0 1/26/20)
विजय की इच्छा रखने वालों के द्वारा यह इतिहास सुना जाना चाहिये।
''नारायण नमस्कृतं नरं चैव नरोत्तमस।
देवी सरस्वती चैव ततो जय मदुरीयते।।
नारायण तथा मनुष्यों में उत्तम नर तथा देवी सरस्वती को प्रणाम करके इस जय लाम के काव्य का वर्णन किया गया है द्वितीय चरण में इसे भारत कहा गया इसमें 24000 श्लोक थे इसे वैम्पायन द्वारा लिया गया '' चतुविशंति साहस्त्री चक्रे भारत संहिताम् तृतीय चरण में 1,00000 श्लोक थे इसका विस्तार लोमहर्षण नाम के सूत ने किया सूत जी ने शौनक आदि ऋषियों को इसका श्रवण कराया।

मूल शब्द: विष्णुसहस्रनाम, भीष्मस्तवराज, वृहद्ग्रन्थ, दृष्टिपात, आजातशत्रु, विचित्रवीर्य, नागलोक, लाक्षागृह, ग्रन्थिक, अम्बालिका, मनवांछित, ईर्ष्याभाव, धृष्टधुम्न, ब्रम्हास्त्र, राजसूय, प्रभावोत्मक, अनुष्टुप ।

प्रस्तावना
भारत की उज्जवल ज्ञान परम्परा की अमर कृति महाभारत विश्व साहित्य की एक श्रेष्ठतम रचना है अपनी गुण बाहुल्यता के कारण इसे पंचम वेद के नाम से ज्ञापित किया जाता है महाभारत एक गर्भ ग्रह के समान है जिसमें भगवतगीता, विष्णुसहस्रनाम, अनुगीता, भीष्मस्तवराज, गजेन्द्रमोक्ष जैसे दार्शनिक तथा अध्यात्मिक एवं भक्तिपूर्ण ग्रन्थों की सृष्टि हुयी है जिससे इसकी महत्वता और अधिक बढ गयी है यह एक बृहदग्रन्थ है इसमें जीवन को कोई भी ऐसा पक्ष नही है जिस पर दृष्टिपात न किया गया हो चाहे वर्ण व्यवस्था हो, आश्रम व्यवस्था हो चारो वर्णो के कर्तव्य व अष्ट प्रकार के विवाह, संस्कार, स्त्रियों की स्थिति सभी पक्षों पर यथोचित दृष्टिपात किया गया है महाभारत के सम्बन्ध में महार्षि वेद व्यास ने ठीक ही लिखा है–

''धर्मे चार्धे च कामें च मोक्षे च भरतषर्भ
यदिहास्ति तदन्यत्र, यत्रें हस्ति न तत् क्वचित।।'' आदिपर्व (62–53)

महाभारत
संवादात्मक शैली में लिखा महाकाव्य है इसकी भाषा गम्भीर और प्रभावोत्मक है इसकी रीति पंचाली तथा शांत रस प्रधान है अनुष्टुप छन्द का अधिकाधिक प्रयोग किया गया है। द्रोण शल्य, कर्ण आदि पर्वो के वीर रस के दर्शन होते है।

भीष्म से सम्बन्धित तथ्य
गंगा और शान्तनु के पुत्र देवव्रत द्वारा अपने वृद्ध पिता शान्तनु के विवाह के लिये सत्यवती के पिता को आजीवन विवाह न करने तथा सत्यवती के पुत्रों को राज्य का उत्राधिकारी बनाने की भीष्म प्रतिज्ञा करना, सत्यवती के बड़े बेटे चित्रांगद की मृत्यु के पश्चात् छोटे बेटे विचित्रवीर्य को गद्दी पर बैठाया गया। जब विचित्रवीर्य विवाह के योग्य हो गये तब भीष्म को खबर लगी की काशीराज की कन्याओं का स्वयंवर होने वाला है भीष्म अपने छोटे भाई विचित्र वीर्य लिये स्वयंवर में सम्मिलित व विजय होकर काशी नरेश की तीनो पुत्रियों को जीतकर रथ पर बिठाकर आगे बडा। सौभदेश का राजा बडा वीर था जिस पर अंबा अनुरक्त जी उसने भीष्म को युद्ध करके रोकना चाहा वह युद्ध में हार गया तब अम्बा के अनुरोध पर भीष्म ने उसे छोड दिया। भीष्म द्वारा अम्बा को सौभदेश भेजना, सौभदेश के राजा द्वारा परित्याग करने पर अम्बा का भीष्म से प्रतिशोध लेने की दृष्टि से परसुराम के पास जाना सहायतार्थ जाना परसुराम और भीष्म का युद्ध होना तथा युद्ध में भीष्म की विजय होने पर अम्बा को घोर तपस्या कर शिखण्डी बनना तथा भीष्म के मृत्यु का कारण बनना।
महाभारत के भीष्म पर्व में वर्णित–भीष्म दस दिन तक कौरवों के सेनापति बनकर पाण्डवों से युद्ध करते है तथा शिखण्डी को आगे करके अर्जुन उनपर वाणों की वर्षा करते है युद्ध के दसवें दिन भीष्म का शरशैया पर पडना भीष्म द्वारा युधिष्ठर को उपदेश देना तथा 58 दिन तक शरशैया पर पडे रहने के पश्चात् सूर्य नारायण के उत्तरायण होने पर इच्छित मृत्यु पाने का वर्णन का वर्णन प्राप्त होता है।
पाण्डवों से सम्बन्धित तथ्य – शान्तनु के पुत्र–विचित्रवीर्य की दो पत्नियां अम्बिका तथा अम्बालिका तथा उसी दासी के महार्षि व्यास के नियोग से धृष्तराष्ट्र, पाण्डु, विदुर का जन्म होता है।
पाण्डु विचित्रवीर्य तथा अम्बालिका के पुत्र थे उनकी दो पत्नियां कुंती और माद्री थी कुंती के तीन पुत्र युधिष्ठर, भीम, अर्जुन तथा माद्री के पुत्रों का नाम नकुल और सहदेव था ये पांच पुत्र पाण्डव कहलाये जो क्रमशः सूर्य वायु इन्द्र तथा अश्विन कुमार की संतान थे।
वन में निवास करते एक दिन पाण्डु ने अपनी पत्नि माद्री से प्रेमलाप करते हुये हिरन और हिरणी वने हुये किन्दम ऋषि पर वाण छोड़ दिया तभी किन्दम ऋषि द्वारा उन्हें श्राप दिया गया कि जब भी वह किसी स्त्री से काम क्रीडा करेगें तभी उनकी मृत्यु हो जायेगी इस श्राप के कारण एक बार जब वह माद्री से काम

क्रीड़ा कर रहे थे तभी उनकी मृत्यु हो गयी। पाण्डु अत्यन्त ही बुद्धिमान तथा ज्ञानी थे इसलिये पाण्डु ने अपने पुत्रों से कहा था कि मेरी मृत्यु के बाद तुम सभी मेरे शरीर को खा जाना सहदेव के अलावा उनके किसी पुत्र ने उनकी बात नही मानी सहदेव ने उनके मस्तिष्क के तीन भाग खाये जिससे उन्हे तीनो कालो का ज्ञान हो गया।

धारी के भाई शकुनि तथा दुःर्योधन की चाल से भीम को भोजन में विष देकर नदी में फेंकना, भीम का नागलोक पहुंचना तथा सर्पो के डसने से जहर का काट होकर मूर्छा से बाहर आना तथा वासुकि, आर्यक नाग द्वारा उसे हजारो हाथियों का बल प्रदान करने वाले कुण्ड का रस पिलाकर सहस्त्र हाथियों का बल प्रदान किया।

पाण्डवों को खाण्डव वन प्रदान किया जाना जो बाद में इन्द्रप्रस्थ बना।

लाक्षाग्रह का निर्माण पुरोचन द्वारा किया गया जिसके पाण्डवो की मृत्यु का षडयंत्र रचा गया पाण्डवो द्वारा लाक्षाग्रह की भीषण अग्निकाण्ड से बचकर एकचक्री नगरी पहुंचा जाता है।

पंचाल नरेश द्रुपद की पुत्री के स्वयंवर की बात सुनकर अर्जुन स्वयंवर में भाग लेते है तथा मछली की ऑख में निशाना लगाकर स्वयंवर में विजय होकर द्रोपदी के साथ विवाह करते है।

महाभारत के सभापर्व में शकुनि द्वारा चौसर का खेल आ आयोजन किया जाता है जिसमें युधिष्ठर को न्योता भेजा जाता है शकुनि छलपूर्ण पांसो की सहायता से युधिष्ठर से उनका राज्य, जीतने के बाद एक–एक करके अपने भाईयों को भी दाव पर लगाने के पश्चात् को भी धुत क्रीडा मे हार जाते है, तब जयद्रथ तथा दुःशासन द्वारा द्रोपदी का अपमान, दुःशासन द्वारा द्रोपदी का चीर हरण होना, तत्पश्चात् भीम द्वारा दुःशासन और दुःर्योधन के वध की प्रतिज्ञा करना सभा पर्व में धुत क्रीडा में ही महाभारत का मूल निहित होता है पाण्डवो को 12 वर्ष का वनवास तथा एक वर्ष का अज्ञात वास दे दिया जाता है। जुए में सब कुछ हारने के बाद पाण्डवो वन को जाते है तब पाण्डव अपना निवास द्वैतवन को बनाते है तथा अर्जुन व्यास जी की आज्ञा से पाशुपत अस्त्र की प्राप्ति हेतु हिमालय जाकर तपस्या करते है।

अज्ञातवास के दौरान पाण्डव मत्स्य नरेश विराट के यहां शरण पाते है वहां वे गुप्त रूप से नाम व वेश बदलकर रहने लगते है अज्ञात वास में युधिष्ठर (कंक) भीम (वल्लभ) अर्जुन (ब्रहन्ला) नकुल (ग्रन्थिक) सहदेव (तंतिपाल) नाम से राजा विराट के यहां सेवा कार्य करते है।

भीम द्वारा विराट की पत्नी सुदेषणा के भाई कीचक का वध, तथा अज्ञात वास का वर्णन विराट पर्व में मिलता है।

सहदेव यह जानते थे कि भविष्य में महाभारत का युद्ध होगा और यह भी जानते थे कि किसकी विजय होगी परन्तु कृष्ण द्वारा मना करने पर उन्होने यह बात किसी को भी नही बतायी।

अर्जुन द्वारा शिखण्डी की आड में भीष्म वध कृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश तथा अपने विराट रूप दर्शन का भीष्म पर्व में निहित होता है।

अर्जुन को अभिमन्यु के वध का समाचार प्राप्त होने पर अर्जुन द्वारा सूर्यास्त से पहले जयप्रद वध की प्रतिज्ञा करना तथा ऐसा न कर सकने पर स्वयं का अग्निदाह करने की प्रतिज्ञा करना।

द्रोण द्वारा जयद्रथ को सेना की पीछे छिपाना तथा यूर्यग्रहण को वास्तविक सूर्यास्त समझकर जब जयद्रथ बाहर आता है तथा कृष्ण के कहने पर अर्जुन द्वारा जयद्रथ का वध करना जिसका वर्णन द्रोण पर्व में मिलता है।

जब गंधारी दुःर्योधन से उसके सम्पूर्ण शरीर को बज्र के समान मकान बनाने के लिये अपने समक्ष नग्न अवस्था में आने के लिये कहती है तब कृष्ण दुःर्योधन से अपने गुप्तागों को वस्त्र से ढकने के लिये कहते है तब दुःर्योधन द्वारा गुप्तांगो को वस्त्र से ढक लिया जाता है और जब गंधारी अपने आंखो की पट्टी छोडकर अपने नेत्र शक्ति से दुःर्योधन को देखती है जब गुप्तांगो पर वस्त्र होने से उतना स्थान उसका कठोर होने से वंचित हो जाता है।

भीम द्वारा दुःर्योधन से गदा युद्ध के दौरान कृष्ण के इसारे पर भीम कृष्ण की जंघा पर बार करते है जंघा का स्थान कठोर न होने के कारण दुःर्योधन की मृत्यु हो जाती है।

महाभारत के यृद्ध के समाप्ति पर पाण्डवो की विजय होती है पाण्डवो द्वारा कुछ समय तक राजकाज करने के बाद, युद्ध में होने वाली अपने बन्धु–बान्धुवों के कारण उनके मन में असन्तोंष उत्पन्न होता है तथा साथ ही कृष्ण की मृत्यु का समाचार सुनकर पाण्डवो में विराग सा छा जाता है तब उनके द्वारा परीक्षित को राजगद्दी पर बैठकर पांचो पाण्डवो द्रोपदी सहित तीर्थ यात्रा करने के लिये निकल जाते है तथा अन्ततः हिमालय यात्रा पर जाते है वहीं पर चारो भाईयों तथा द्रोपदी की मृत्यु हो जाती है केवल युधिष्ठर की सशरीर स्वर्ग जाते है।

कर्ण से सम्बन्धित तथ्य

यादवराज सुरा की पुत्री प्रथा जो कि कुन्ती भोज द्वारा गोद लेने के कारण कुन्ती कहलायी। कुन्ती जब अल्पावस्था की थी तब ऋषि दुर्वासा द्वारा उन्हे एक मंत्र दिया जिससे उन्हे मनवांछित फल की प्राप्ति होगी एक बार कुन्ती द्वारा सूर्य को देखकर वह मंत्र कह दिया गया जिससे सूर्य भगवान उनकी नाभि के प्रवेश कर उन्हे गर्भवती कर देते है समाज के भय से कुन्ती अपने इस सूर्यपुत्र कर्ण को नदी में प्रवाहित कर देती है तब उसका राधा व अतिरथ द्वारा पालन–पोषण किया जाता है कर्ण को सभी सूत पुत्र कहकर तिरस्कार करते थे और उसे कभी भी समाज मे सम्मान नही मिला जिससे वह समाज से अत्यधिक रूष्ट रहता था।

कर्ण ने परसुराम से अस्त्र–शस्त्र की विद्या ब्राम्हण बालक का भेष प्राप्त की परन्तु जब परसुराम को यह ज्ञात हुआ की कर्ण ब्राम्हण न होकर एक सूत पुत्र है तब उसको श्राप दिया ''कि मेरे द्वारा प्राप्त विद्या को समय आने पर तू भूल जायेगा।''

कुन्ती जब कर्ण से पाण्डवो की तरफ से युद्ध करने के लिये कहती है तब कर्ण कहते है कि मैं पाण्डव का साथ देता हूँ कि लोगो द्वारा मैं कायर कहलाऊंगा इसलिये युद्ध तो मैं कौरवों के तरफ से ही करूंगा परन्तु मैं आपको वचन देता हूँ कि अर्जुन के अलावा में आपके किसी भी पुत्र का वध नही करूंगा इस प्रकार युद्ध में चाहे मैं मारा जाऊ चाहे अर्जुन आपके पांच पुत्र ही जीवित रहेगें। कर्ण के पास जन्म से ही कवच और कुण्डल प्राप्त थे जिसका इन्द्र ने ब्राम्हण वेश धरकर कर्ण से छलपूर्वक दान में लिया था उसके बदले इन्द्र ने उन्हे एक अमोघ अस्त्र प्रदान किया था जिसका बार अचूक था लेकिन कर्ण उसका प्रयोग केवल एक बार ही कर सकता था।

महाभारत के युद्ध के दौरान जब कर्ण कौरवों के सेनापति थे तब भीम पुत्र घटोत्कच जो कि अत्यन्त बलशाली होने के साथ ही मायावी भी था वह आकाश से अग्नि वाणों की वर्षा करने लगा जिससे कौरवों की सेना का सर्वनाश होते देख कर्ण चिंतित हो गये तब दुःर्योधन के कहने पर कर्ण ने इन्द्र द्वारा दी हुयी अमोघ शक्ति द्वारा घटोत्कच का वध कर दिया गया।

अर्जुन और कर्ण के मध्य युद्ध के दौरान जब कर्ण के रथ का पहिया टूट जाता है तब अपने अस्त्र नीचे रखकर कर्ण पहिया लगाने लगते है तब कृष्ण के कहने पर अजुर्न कर्ण का बध कर देते है।

कौरवों से सम्बन्धित तथ्य

धृतराष्ट्र और गंधारी से उत्पन्न पुत्र कौरव कहलायें दुःर्योधन

धृतराष्ट्र के बडे बेटे थे वे बचपन से ही वे अपने चचेरे भाईयों (पाण्डवों) से उनके गुणों के कारण ईर्ष्या रखते थे। दुःर्योधन का मामा शकुनि हमेशा दुःर्योधन की ईर्ष्याभाव का समर्थन करते हुये उसे उत्तेजित करने का कार्य करता था।

धृतराष्ट्र अपने पुत्रो द्वारा किये गये अनीति पूर्ण कृत्य से परेशान रहते थे तथा कई बार उसे समझाने का प्रयास भी किया परन्तु दुःर्योधन हठी प्रवृत्ति का होने के कारण उनकी एक न सुनता तथा निरन्तर पाण्डवों के प्रति अपने मामा शकुनि से मिलकर षडयंत्र रचता रहता था।

धृतराष्ट्र अपने पुत्रों से अत्यधिक प्रेम करने के कारण उसका विरोध नही कर पाते थे इस प्रकार दुःर्योधन द्वारा नित्य नये कुचक्रों का जाल पाण्डवों पर चला जाता था। जिससे पाण्डवों को हमेशा दुःर्योधन द्वारा कष्ट पीडा और दुःख का सामना करना पडता था।

दुःर्योधन दुःशासन द्वारा द्रोपदी को भरी सभा में निर्वस्त्र करना तथा पाण्डवों से छलपूर्वक उनका राज्य छीनना, तथा कई बार उनकी मृत्यु करने का प्रयास किया जाता है।

संजय से सम्बन्धित तथ्य

संजय के पिता बुनकर थे उनका नाम गावल्यगन था इसलिये संजय एक शूद्र पुत्र होने के बाद भी वेदो के ज्ञाता थे वे हमेशा धृतराष्ट्र को सही सलाह देते थे वे स्पष्टवादी भी थे, शकुनि की कुटिलता तथा दुःर्योधन द्वारा पाण्डवों के साथ किये हिंसक व्यवहार के बारे में वे धृतराष्ट्र को सूचित करते रहते थे।

महार्षि वेद व्यास द्वारा उन्हे दिव्य दृष्टि प्रदान की गयी थी। जिससे उन्होने महाभारत के युद्ध का सम्पूर्ण वृतान्त धृतराष्ट्र को सुनाया था। महाभारत में अर्जुन के अलावा संजय ने भी भगवान कृष्ण के दिव्य विराट स्वरूप के दर्शन किये थे जोकि देवताओं को भी दुर्लभ होते है।

महाभारत के युद्ध के पश्चात् व धृतराष्ट्र गांधारी सहित वनवास को चले जाते है तथा धृतराष्ट्र की मृत्यु के बाद वे हिमालय यात्रा पर जाते है।

द्रोण से सम्बन्धित तथ्य

द्रोण महार्षि भरद्वाज के पुत्र थे, तथा दुपद्र के बाल सखा थे कृपाचार्य की बहिन कृपि से उनका विवाह हुआ था उनका अश्वत्थामा नाम का एक पुत्र था। वे अत्यन्त ही निर्धन थे एक बार उसने सुना की परसुराम ब्राहम्णों को दान दे रहे है तब वह भी वहां पहुंचा परन्तु परसुराम जब तक अपनी सारी सम्पत्ति दान दे चुके थे तब परसुराम ने द्रोण से कहा मेरी शस्त्र विद्या ही अब मेरे पास बची है वह मैं तुम्हे देता हूँ इस प्रकार द्रोण ने परसुराम से अस्त्र शस्त्र विद्या ग्रहण की।

पाण्डवो ने प्रारम्भ में कृपाचार्य और बाद में द्रोणाचार्य से विद्या ग्रहण की अर्जुन ने सबसे प्रिय शिष्य थे इसलिये उन्होने ब्रम्हास्त्र का प्रयोग केवल अर्जुन और अपने पुत्र अश्वत्थामा को ही दिया था।

महाभारत के युद्ध में द्रोण कौरवों की तरफ से सेना का नेतृत्व कर रहे थे उन्होंने कौरवों की तरफ से घमासान युद्ध किया। जब अर्जुन संशप्तकों से युद्ध करते दक्षिण दिशा की तरफ चले गये तब द्रोण ने चक्रव्यूह रचा और युधिष्ठर पर धावा बोल दिया पाण्डवों की सेना ने जमकर द्रोण का सामना किया लेकिन कोई भी द्रोण के आगे टिक नही पाया तब युधिष्ठर के पूछने पर कि कौन चक्रव्यूह में प्रवेश कर सकता है बालक अभिमन्यु ने कहा कि मैं प्रवेश करना तो जानता हूँ मगर निकलना नही जानता तब भीम आदि योद्धाओं द्वारा कि हम भी पीछे आते है अभिमन्यु चक्रव्यूह में प्रवेश कर जाते है परन्तु अन्ततः जयद्रव द्वारा अभिमन्यु का वध कर दिया जाता है।

द्रोण को जब युद्ध के दौरान अश्वत्थामा मारा गया यह समाचार मिलता है तब मैं स्तब्ध रह जाते है वह अश्वत्थामा (हाथी) को अपना पुत्र अश्वत्थामा की मृत्यु समझ कर दुःखी होते हुये समाधि लेने के लिये तैयार होते है तभी द्रोपदी के भाई धृष्टधुम्न द्वारा उनका सिर काटकर वध कर दिया जाता है।

अश्वत्थामा से सम्बन्धित तथ्य

अश्वत्थामा अपने पिता द्रोण के वध का प्रतिशोध लेना चाहता था इसलिये वह रात्रि के समय पाण्डवों के शिविर की तरफ बढा तब कृपाचार्य कृतवर्मा द्वारा उसके अनीति पूर्ण कार्य को बताकर रोका गया परन्तु अश्वथामा ने उनकी एक न सुनी वह धृष्टधुम्न के शिविर में घुसा और सोते हुये धृष्टधुम्न को पैरों से कुचल कर मार दिया तथा वाकी सभी पांचाल से आये हुये सैनिको का वध भी कर डाला तथा सोते हुये पांच द्रोपदी पुत्रों को मारने के बाद शिविर में आग लगा दी भागते हुये सैनिको को भी निर्दयता से मार डाला कृपाचार्य कृत वर्मा ने भी इस हत्याकाण्ड में उसका साथ दिया।

अश्वथामा द्वारा पाण्डवों के वंश का समूल नाश करने पर शोकाकुल स्त्रियों के विलाप करने पर अर्जुन अश्वथामा की खोज करते है तथा दोनो व्यास आश्रम के समीप युद्ध करते है अर्जुन अश्वथामा दोनो ओर से ब्रम्हास्त्र का प्रयोग किया जाता है तब महार्षि व्यास के कहने पर अर्जुन अपना ब्रम्हास्त्र वापस लेते है तथा अश्वथामा अपने ब्रम्हास्त्र से उत्तरा का गर्भ खंण्डित कर देते है तभी कृष्ण द्वारा अश्वथामा को श्राप दे दिया जाता है कि तू इसी पल निस्तेज हो जाये तेरे शरीर से हजारो वध किये लोगो के लहू की बदबू आती रहे और तू तीन हजार तीन वर्ष तक अपने रोगो से भरी काया लेकर निसहाय जीवन यापन करता रहे और उसके मस्तिष्क में लगी मणि को छीन लेते है।

कृष्ण से सम्बन्धित तथ्य

कृष्ण पाण्डवों के ममेरे भाई थे वे पाण्डवों की तरफ से कौरवों के पास शान्ति दूत बनकर गये थे उन्होने पाण्डवों के समक्ष आधा राज्य देने की बात कही परन्तु दुःर्योधन ने बिना युद्ध के सुई की नोक के बराबर भूमि न देने की बात की तथा कृष्ण का अपमान किया जिससे की भीम आदि पाण्डवों का क्रोध भड़क उठा।

महाभारत के युद्ध में कृष्ण अर्जुन के सारथि बने तथा युद्ध में अर्जुन मार्गदर्शन करते है जब कृष्ण अपने बन्धु–बान्धवों के ऊपर शस्त्र न उठाने की बात कहते है तब कृष्ण द्वारा अर्जुन को गीता का उपदेश तथा अपने विराट स्वरूप का दर्शन कराया जाता है। कृष्ण द्वारा महाभारत में युद्ध में शस्त्र न उठाने की प्रतिज्ञा की जाती है परन्तु युद्ध के नौवें दिन कृष्ण द्वारा यह प्रतिज्ञा तोड दी जाती है।

युद्ध में जब भागदत्त अर्जुन पर नारायण अस्त्र चलाते है तब कृष्ण नारायण अस्त्र का प्रहार अपने ऊपर ले लेते है।

कृष्ण द्वारा अपनी बुआ शिशुपाल की माता को वचन दिया जाता है कि वह उसके पुत्र की सौ गलतियों को क्षमा करेगा। परन्तु जब युधिष्ठर राजसूय यज्ञ करते है तब युधिष्ठर द्वारा कृष्ण का सम्मान देखकर शिशपाल उनके लिये अपशब्दों का प्रयोग करता है श्री कृष्ण उसके द्वारा कहे गये सौ अपशब्दो को क्षमा कर देते है परन्तु उसकी एक सौ से ज्यादा गलती होने पर अपने सुदर्शन से उसका सिर काट देते है उसका तेज कृष्ण में समाहित हो जाता है।

धृतराष्ट्र भीम का आलिंगन कर उसे नष्ट करना चाहता है तब कृष्ण द्वारा धृतराष्ट्र के समक्ष भीम का लोहे का पुतला आलिगंन कराया जाता है। जिसे धृतराष्ट्र द्वारा नष्ट कर दिया जाता है इस प्रकार कृष्ण भीम की रक्षा करते है।

गांधारी द्वारा कृष्ण को श्राप देना कि जिस प्रकार कौरव और पाण्डव अपने आपसी संघर्ष के कारण नष्ट हुये है उसी प्रकार

तुम्हारा यदुवंश भी आपसी संघर्ष से नष्ट होगा।
महाभारत के युद्ध के पश्चात् कृष्ण ने छत्तीस वर्ष तक द्वारिका में राज्य किया उनके राज्य में यदुवंशियों ने सुख समृद्धि को भोगा परन्तु गांधारी के श्राप के अनुसार अन्ततः आपसी संघर्ष के कारण विशाल यदुवंशीय का विनाश हो गया यदुवंशीयों का विनाश देखकर बलराम ने समाधि में बैठकर प्राण त्याग दिये।
अपने वंशजो का विनाश देकर कृष्ण ध्यान मग्न होकर वन मे विचरते हुये एक पेड के नीचे लेट गये तब बहेलिये द्वारा मृग समझकर उनके तलुए में तीर मार दिया गया जिससे उनके प्राण निकल गये।

उपसंहार

महाभारत एक दृष्टि में नहीं अनेक दृष्टि से महत्व रखता है महाभारत में राजनीत–कूटनीति अनीति आदि के साथ ही राजधर्म के संवर्गो का भी निरूपण किया गया है, आख्यान साहित्य का अक्षय भण्डार होने के साथ ही जीवन की सभी समस्याओं का वर्णन प्राप्त होता है महाभारत में यदि एक और राष्ट्र धर्म का वर्णन है तो दूसरी ओर मोक्ष धर्म का एक और कर्मयोग का उद्देश्य दिया है तो दूसरी और ज्ञानयोग महाभारत के युधिष्ठर जैसे अजात शत्रु है तो कही भीष्म जैसे नैतिक ब्रम्ह्चारी यदि कृष्ण जैसे योगी और नीति निपुण है तो दुःर्योधन अनीति और अनाचार की प्रतिमूर्ति, विदुर जैसे सज्जन है वहीं दूसरी ओर शकुनि जैसे छली और कपटी व्यक्ति सभी प्रकार के विरोधी आचरण से परिपूर्ण होने के बाद भी महाभारत विश्व साहित्य में आद्वितीय ग्रन्थकोश है।
''महत्वाद् भारवत्वाच्च महाभारत मुच्यतें'' इसमें प्राप्त आख्यान तो परवर्ती कवियों के लिये तो यह प्रेरणा स्रोत है –
''सर्वेषां कवि मुख्यानामु जीव्यों भविष्यति।
महाभारत पर्जन्य इव भूतानामक्षापों भारतद्रुम।। (महा0 आदि पर्व 1–108)
इस प्रकार हम कह सकते है कि महाभारत रूपी मणिरत्न से सम्पूर्ण साहित्यक जगत चिरकाल तक प्रकाशित होता रहेगा तथा लोक विधाओं से परिपूर्ण इस महाकाव्य से सम्पूर्ण मानवजाति लाभान्वित होती रहेगी।

सन्दर्भ सूची

1. महा0 आदि पर्व 1/26/20.
2. महाभारत आदि पर्व 42–30, आदि पर्व 62–22, आदि पर्व 62–53
3. श्री मन वेदव्यास रचित महाभारत (गीता प्रेस गोरखपुर)